आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता

**ISSN-2319 9318**
**UGC Approved 62759**

# हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव

संपादक मंडल
अध्यक्ष
प्राचार्य डॉ. एम. रफिक सरखवास

उपाध्यक्ष

डॉ. शवील अहमद
उपप्राचार्य, कला शाखा

डॉ.आफताब अन्वर शेख
उपप्राचार्य, वाणिज्य शाखा

प्रा.इकबाल शेख
समन्वयक, विज्ञान शाखा

कार्यकारी संपादक

डॉ. शेख मोहम्मद शाकिर

डॉ. बाबा शेख

सदस्य

प्रा. रूकसाना शेख

प्रा. इम्तियाज आगा

डॉ.मो. सलिम मनियार

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vaidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors

# हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव


❖ **Publisher :**

**Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.**
Limbaganesh, Dist. Beed (Maharashtra)
Pin-431126, vidyawarta@gmail.com

❖ **Printed by :**

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
Limbaganesh, Dist. Beed, Pin-431126

❖ **Page design & Cover :**

Shaikh Jahurodden

❖ **Edition: July 2017**

**ISSN 2319 9318**
**UGC Approvel ; 62759**

❖ **Price : 500/ -**

**Note :** The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

http://www.printingarea.blogspot.com

# अनुक्रमाणिका


| अनुक्रम | शोधालेख प्रस्तोता का नाम | विषय | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| 1 | डॉ. अंजली कायस्था | हिन्दी कहानी एवं उपन्यासों में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 10 |
| 2 | डॉ. (श्रीमती) अनसूया अग्रवाल | गीति काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव | 14 |
| 3 | शेख आसमा एम. | निदा फाज़ली के काव्य में सांप्रदायिक सौहार्द | 17 |
| 4 | कुमार अश्विन अनिल सुरवाडे | हिंदी काव्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भावना | 20 |
| 5 | डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे | रामवृक्ष बेनीपुरी के 'सुभान खाँ' कहानी में चित्रित एकता तथा सांप्रदायिक सदभाव | 22 |
| 6 | दिलशाद अहमद | मंज़ूर एहतेशाम के उपन्यास में अभिव्यक्त राष्ट्रीय 'खा बरगदलू' एकता और सांप्रदायिक सद्भाव | 26 |
| 7 | डॉ.शिल्पा जिवरग, डॉ.रमा दुधमांडे | हिन्दी उपन्यासों में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 29 |
| 8 | डॉ. मधुकर खराटे | दुष्यंतोत्तर हिंदी ग़ज़लों में साम्प्रदायिक सद्भाव के स्वर | 33 |
| 9 | प्रा. डॉ. एमेकर पी. एन. | मुंबई काण्ड कहानी में व्यक्त सांप्रदायिक सद्भाव | 40 |
| 10 | म. इसमाईल म. हुसेन | छायावादी युग में राष्ट्रीयता | 43 |
| 11 | प्रा. मुजावर जैनु हमिद | सांप्रदायिक सद्भाव और हिंदी उपन्यास | 47 |
| 12 | डॉ. नानासाहेब जावळे | डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 50 |
| 13 | डॉ. बलवंत जेऊरकर | हिंदी कविता में सांप्रदायिक सद□व | 53 |
| 14 | डॉ. विनोदकुमार विलासराव वायचळ 'वेदार्य' | हिन्दी चलचित्र विधा में साम्प्रदायिक सद्भाव | 56 |
| 15 | प्रा.डॉ.अनिता वेताळ/अत्रे | हिन्दी साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 59 |
| 16 | डॉ.शकिला ज.मुल्ला | हिंदी कहानी साहित्य में सांप्रदायिक सद्भाव का चित्रण | 61 |
| 17 | प्रा. संध्या तायडे | हिन्दी कथा साहित्य में राष्ट्रीयता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 64 |
| 18 | डॉ॰ कॅप्ट॰ बाबासाहेब माने | 'आना इस देश' उपन्यास में निहित राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 66 |
| 19 | प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी | साम्प्रदायिक सद्भाव की तलाश : टोपी शुक्ला | 70 |
| 20 | डॉ. विजय महादेव गाडे | तुम बिलकुल हम जैसे निकले ! | 74 |
| 21 | डॉ.कान्ता एम्. भाला | प्रगतिवादी काव्यधारा में राष्ट्रीयता एवं साम्प्रदायिकता | 78 |
| 22 | डॉ. बेबी कोलते | हिंदी कथा साहित्य में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव | 83 |

# 18."आना इस देश" उपन्यास में निहित राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव

डॉ॰ कॅप्ट॰ बाबासाहेब माने
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय, जुन्नर,
जिला– पुणे

'आना इस देश' उपन्यास में भारत और पाकिस्तान के बंटवारे से उत्पन्न अलगाववादी विचारों को उद्घाटित करता हुआ युवा पीढ़ी के प्यार के माध्यम से राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव को नए सिरे उपस्थित करता है। इसमें भारत और पाकिस्तान में रहने वाले हिंदू और मुस्लिम लोगों के संबंधों एवं उनके परस्पर देशों संबंधी विचारों एवं भाव–भावनाओं को वाणी दी है। उपन्यास की नायिका पाकिस्तान की तलाकशुदा सुरैय्या नाम की युवती है। जो तलाकशुदा नारी के अकेलेपन और हवस की शिकार से संत्रस्त है। सुरैय्या के जीवन में आए उतार–चढ़ाओं और उसका अकेलापन एवं भारत को देखने की उसकी लालसा तथा सामाजिक एवं धार्मिक बंधनों में अटका उसका जीवन और सुरैय्या और अबीर के निश्चल प्यार वी अतृप्त इच्छाओं की दास्तॉ इस उपन्यास की कथावस्तु के प्रमुख बिंदु नजर आते हैं।

सुरैय्या का जन्म पाकिस्तान में हुआ है। वह कराची में पली–बढ़ी है। उसकी शिक्षा कराची के एक कॉनवेंट स्कूल में हुई है। इस वजह से वह मुस्लिम रीति–रिवाजों के बंधानों से मुक्त जीवन उम्र के एक पडाव तक जीती है। परंतु उसका पिता नदीम जो भारतीय सेना के कुछ गुप्त दस्तावेज लेकर पाकिस्तान भागा था। वह अपनी बेटी सुरैय्या की शादी उसकी रजामंदी के बिना पाकिस्तानी एअरफोर्स के परवेज से करता है। परवेज सुरैय्या से दुगुनी उम्र का इंसान है और उसकी पहली पत्नी की मृत्यु हुई है। परेवज सुरैय्या पर अनेक धर्मगत बंधन लादकर अन्याय–अत्याचार करता है। उसे निरंतर अपनी हवस का शिकार बनाता है। इतना ही नहीं, उसके सामने ही उसकी फूफी की 14 साल की लड़की का बलात्कार करने की भी कोशिश करता है। उसी वक्त सुरैय्या उसके खिलाफ आवाज उठाकर उससे अलग होती है और अपने नवजात बच्चे के साथ मायके आकर रहने लगती है। वह परवेज से तलाक चाहती है, परंतु परवेज उसे तलाक नहीं देता। बार–बार उस पर दबाव बनाने की कोशिश करता है। परवेज फिर एक और महिला के साथ शादी करके अपना घर बसा लेता है। अतः सुरैय्या के ससुराल जाने के सभी रास्ते बंद हो जाते हैं। ऐसे समय में भी वह अपने बच्चे के साथ बची हुई जिंदगी काटना चाहती है, परंतु वह बच्चा भी मर जाता है। फिर उसके अब्बा यानी नदीम उसे खाला के पास दुबई भेज देते हैं। उसी समय उसकी मुलाकात गीत और अर्जुन से होती है। जो भारतीय हिंदू हैं और दुबई में रह रहे हैं। परंतु वहॉ पर भी खाला का दामाद उसको अपनी दूसरी बीबी बनाना चाहता है। जब सर के ऊपर से पानी गुजरने लगता है तो सुरैय्या गीत को सबकुछ बता देती है। उस समय गीत और अर्जुन सुरैय्या को सहरा देते हैं और उसे अपने गेस्टरुम में रहने का बंदोबस्त करते हैं। उनका बेटा 'सुर' जो छोटा है, उसे सुरैय्या बहुत चाहती है। इसी कारण भी अर्जुन और गीत सुरैय्या को अधिक पसंद करने लगते हैं।

सुरैय्या का पिता नदीम भारत के साथ गद्दारी करके पाकिस्तान चला गया था। परंतु सुरैय्या के चाचा, मामू , नाना, नानी आदि सभी उत्तर प्रदेश के रामपुर में ही रहते हैं। सुरैय्या की मॉ तरन्नुम और दादी को भारत से बिछोह सहा नहीं जाता। उनके मन में भारत निरंतर बसा हुआ है। सुरैय्या की मॉ और दादी नदीम को बार–बार भारत के साथ की गई गद्दारी के कारण टोकते हैं। परंतु नदीम धर्मांध हैं और वह पाकिस्तान तथा मुस्लिम धर्म को ही सर्वोपरि मानता है। दूसरे धर्मो

के प्रति खासकर हिंदू धर्म एवं हिंदुस्तान के प्रति उनके मन में अनेक कटु विचार हैं। इसलिए वह भारत की मिलटरी के कुछ गुप्त दस्तावेज चुराकर पाकिस्तान भाग गया था। वह अपने परिवार पर भी मुस्लिम धार्मिक कट्टरता का सतत दबाव डालता है। इसी वजह से पाकिस्तान ने उसे अपनी सेना में मेजर बना दिया है और कराची में एक अच्छा–सा प्लैट भी मुहैय्या कराया है। सुरैय्या अपनी मॉ तरन्नुम और दादी की इच्छा के खातिर भारत में रह रहे अपने मामाओं, नाना–नानी और चाचाओं से मिलना चाहती है। अतः उसे भारत लाने का इंतजाम गीत और अर्जुन करते हैं। जब वह गीत और अर्जुन के साथ भारत इंदौर आती है, तभी उसकी मुलाकात गीत के भाई अवधेश के दोस्त अबीर से होती है। यहीं से अबीर और सुरैय्या में प्रेम कहानी शुरु होती है और दोनों का ओंकारेश्वर में देह मिलन भी हो जाता है। दोनों के मन में शादी करने की इच्छा होने के बावजूद भी वे शादी नहीं कर पाते। चूँकि वे दोनों अलग–अलग धर्मों एवं देशों के बंधनों में जकडे हुए हैं। अबीर के मन में बार–बार सुरैय्या से शादी करके घर बसाने के विचार आते हैं। परंतु दोनों के प्यार में धर्म एवं देश की सीमाएँ तथा धार्मिक बंधन आडे आते हैं। दूसरी बार अबीर सुरैय्या को मिलने पाकिस्तान जाता है। तीसरी बार जब सुरैय्या हिंदुस्तान में एक गजल गायन कार्यक्रम में भाग लेने आती है। वहॉ पर भी अबीर और सुरैय्या की मुलाकात होती है। इसी तरह से दोनों की मुलाकातों का सिलसिला जारी रहता है और उन दोनों का प्यार अपने परवान चढ़ता जाता है। परंतु दोनों भी सामाजिक मान्यताओं एवं देशीय सीमाओं के आगे जा नहीं पाते। अबीर के माता–पिता अबीर की शादी तनु नाम की भारतीय लडकी के साथ तय करते हैं। जबकि अबीर इसके लिए टालमटोल करता है, परंतु आखिरकार वह भी अपने परिवार के खातिर राजी हो ही जाता है। अपनी शादी की व्यस्तता के कारण अबीर अपने दोस्त अंकित को सुरैय्या को पाकिस्तान की सीमा तक छोड आने का जिम्मा सौंपता है। अंकित उसे सही सलामत पाकिस्तान की सीमा तक छोड आता है। परंतु पाक सीमा के अंदर जैसे ही सुरैय्या दाखिल हो जाती है तो वहॉ के कुछ दरिंदे सुरैय्या को अगवा कर उसका बार–बार बलात्कार करते हैं। उसे कई दिनों तक भूखा रखते हैं । अतः वह पागल बन जाती है और अंत में उसकी मौत भारत पाक सीमा पर ही अबीर का नाम लेते हुए हो जाती है। अबीर उसे बचाने की कोशिश जरुर करता है। परंतु वह सफल नहीं हो पाता। अतः वह सुरैय्या के शव को भारतीय सीमा के अंदर ही मुस्लिम रिवाजों के अनुसार दफन कर देता है। अबीर और सुरैय्या की इस अतृप्त प्रेम कहानी में संलिप्त गीत और अर्जुन तथा अंकित जैसे युवा पात्रों के माध्यम से लेखिका ने प्यार के आगे धर्म, जाति एवं देश की सीमाओं को दोयम सिद्ध करने की सफल कोशिश की है।

हिंदुस्तान में रहने वाला अबीर हिंदू है और सुरैय्या पाकिस्तानी तलाकशुदा मुस्लिम नारी। परंतु दोनों में आत्मीय लगाव इस कदर उत्पन्न होता है। जैसे लैला–मजनू में हुआ था। जैसे हीर–रांझा में हुआ था। अतः दोनों का प्यार धर्मों एवं देशों की सीमाओं को तोडकर एकाकार होना चाहता है। परंतु पारिवारिक, धार्मिक एवं देशीय सोच के आगे लाचार हो वह आखिरकार अधूरा ही रह जाता है । दोनों की इच्छाएँ अतृप्त ही रहती हैं। उनके प्यार में सच्ची इंसानियत के भाव भरे हैं। चूँकि चाहे किसी भी देश, धर्म एवं जाति के नर–नारी क्यों न हो? उनमें प्यार एवं आत्मीयता की भावना एक जैसी ही होती है। इसलिए तो अबीर सुरैय्या के तलाकशुदा पाकिस्तानी मुस्लिम नारी होने बावजूद भी उसे हृदय से चाहता है। सुरैय्या भी केवल कामवासना के लिए उसका इस्तेमाल नहीं करती है, बल्कि वह भी अबीर को दिलोजान से चाहने लगती है। अबीर सुरैय्या को भारत में हर मुमकिन मदद करता है। उसे उसके नाना–नानी, मामाओं तथा चाचाओं से मिलवाता है। उसकी

मॉ तरन्नुम को भारत में दफनाने में मद्द करता है। अबीर के विचार उदारवादी हैं। वह इंसानियत, प्यार, भाईचारा एवं सौहार्द में विश्वास करने वाला युवक है। उसके उदारवादी विचार निम्न कथन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होते हैं, जो राष्ट्रीय एकता और सांप्रदायिक सद्भाव को उजागर करते हैं। जब सुरैय्या रामपुर में स्थित अपने नाना–नानी और मामाओं को मिलकर अबीर के साथ इंदौर लौट रही थी। तभी सिमरोल के आगे भंवरकुआं के पास दो मोटरों में टक्कर हुई थी। इसमें एक हिंदू परिवार था और दूसरा मुसलमान। इस ॲक्सिडेंट में दो लोग जगह पर ही मर गए थे और कई लोग घायल थे। अबीर उन घायलों को अस्पताल पहुँचाता है । उसमें मुस्लिम परिवार का एक लडका भी था, जिसे अबीर ने अस्पताल पहुँचाया था। उस लडके का पिता जस्टिस कुरैशी अबीर को ढ़ेर सारी दुवाएँ देता हुआ कहता है कि – "खुदा तुम्हें ढ़ेरों खुशियॉ दे। तुमने मेरे इकलौते बेटे को संभाला। ... ... बेटा तुमने हिंदू होकर मुसलमान की जान बचाई?"

इस पर अबीर कहता है– "आप कैसी बात कर रहे हैं । कब तक हम पाकिस्तानी व हिंदुस्तानी बने रहेंगे ? इंसान व हैवान तो दोनों जगह हैं। खुंखार दरिंदे वहॉ भी ! शहरों में बियाबान वहॉ भी यहॉ भी। इंसान परेशान वहॉ भी यहॉ भी । सच्चा भारतीय तो कभी हिंदू व मुसलमान का भेद नहीं करता ।"[1] अबीर के इस कथन से स्पष्ट है कि सच्चा भारतीय वही कहलाता है जो इंसानियत को बढ़ावा देता है। जो सांप्रदायिक ताकतों को भाईचारा, सौहार्द एवं अमन से रहने की सीख प्रदान करता है । जो धर्मभेद एवं जातिभेद से ऊपर उठकर पीडितों एवं घायलों की सेवा करता है। जिसके हृदय में प्रत्येक जीव के लिए संवेदना निहित होती है।

केवल हिंदू–मुसलमानों के बीच ही इसप्रकार सौहार्द नहीं है, बल्कि यहॉ के अनेक धर्म समुदायों में परस्पर स्नेह एवं आदरभाव दिखाई देता है। अबीर का निम्न कथन इसी को ही स्पष्ट करता है। जब सुरैय्या रामपुर के अपने नाना, नानी और मामाओं से मिलकर इंदौर आ रही थी । तब अबीर उसे कहता है कि – "आपको पता नहीं कि यहॉ बिहार जिला भी है, जहॉ पटना है, वहीं सीवान जिले के ठेपरा गॉव में हिंदू भी मुहर्रम मनाते हैं। ताजिया निकालते हैं। सीवान के जीरादोई से 12 कि.मी. दूर गॉव में सोमवार को हिंदू–मुस्लिम एक होकर मस्ती करते हैं। ये सब रोजा रखते हैं। मुहर्रम पर हिंदू औरतें रोती हैं, ईद मनाती हैं।"[2] इस तरह का सांप्रदायिक सद्भावना युक्त माहौल केवल बिहार में ही नहीं, बल्कि भारत के कई इलाकों में दृष्टिगोचर होता है । चंद ही लोग ऐसे होते हैं, जों सांप्रदायिक सद्भाव को चोट पहुँचाते हैं। राष्ट्रीय एकता में बाधा पैदा करने की कोशिश करते हैं। ये लोग अलग–अलग धर्मों की आम जनता की कमजोरियों को पहचानकर उन कमजोरियों का फायदा उठाकर उनके द्वारा गलत कार्य करवाते हैं। इसके लिए राजनैतिक शक्तियों के साथ ही भिन्न–भिन्न धर्मों के ठेकेदार (पंडित, मौलवी, पादरी आदि) भी जिम्मेवार होते हैं। ये ही लोग अपने–अपने समुदायों को गुमराह कर उनमें आपसी दंगे–फसाद, खून–खराबा और आंतकवादी गतिविधियॉ करवाते हैं। गीत की मॉ के यह विचार ऐसे लोगों की मानसिकताओं को यथार्थ रुप में उजागर करते हैं और धर्म का सही अर्थ समझाते हैं। जब गीत के घर में काम करने वाली मुस्लिम औरत शमा और हिंदू औरत रामकली के छः छः बच्चों और उनके शराबी पतियों के कारण हुई दुर्दशा की चर्चा गीत, सुरैय्या और अबीर कर रहे थे। उस वक्त गीत की मॉ उन दोनों औरतों के बारे में कहती है कि "वो रामकली कहती है कि बच्चे ईश्वर की देन है और शमा कहती है अल्ला ताला की रहमत है। हमारे धर्म में तो औलाद बढ़ाना अच्छा है। मौलवी सा ऐसा ही कह रहे थे । पर.....

क्या समझेंगी दोनों ! जाहिल हैं। अंगूठा छाप ! कैसे समझायें कि पादरी, पंडित, मौलवी मनुष्य की कमजोरियॉ जानते हैं और उन्हीं कमजोरियों का शोषण कर भुनाते हैं । धर्म एवं मजहब कभी इंसानियत को गुमराह नहीं करते। सच्चा धर्म तो वो है, जो इंसान को दुःखों व कमजोरियों से मुक्त होने का रास्ता बताये।" [3] अतः स्पष्ट है कि कोई भी धर्म किसी भी तरह की हिंसा की परौकारी नहीं करता है । वह हमेशा इंसानियत की बात करता है और सांप्रदायिक सद्भावों को ही बढ़ावा देता है। वह इंसान की कमजोरियों और दुःखों को दूर करने के मार्ग भी प्रशस्त करता है। अतः कोई भी धर्म बुरा एवं हीन नहीं होता। इसलिए विविध धर्मों एवं सांप्रदायिक ताकतों को परस्पर स्नेह, भाईचारा एवं आत्मीय भाव से रहना चाहिए। देश की एकता और अखंडता को अक्षुण्ण रखने की कोशिश करनी चाहिए। तभी भारत में राष्ट्रीय एकता एवं सांप्रदायिक सद्भाव वृद्धिंगत हो सकता है। अन्यथा अगर इनमें कभी धर्म के नाम पर तो कभी जाति के नाम पर परस्पर कलह जारी रहा तो पाकिस्तान और चीन जैसे कट्टरतावादी एवं विस्तारवादी सोच वाले देश भारत को बर्बाद करने में समय नहीं लगायेंगे। अतः समय रहते ही हमें जागृत होना होगा। आपस में आत्मीय संबंध निर्माण करने हेतु रोटी–बेटी का भी व्यवहार करना होगा। अलग–अलग धर्मों की पवित्रता को आत्मसात करना होगा। सभी धर्मों एवं जातियों के लोगों को जीने का समान अधिकार देना होगा। परस्पर धर्मों का आदर एवं सम्मान करना होगा । तभी अगली पीढ़ी धर्म एवं देशीय सीमाओं के परे आत्मीय संबंध निर्माण करने में कामयाब होगी । देश की एकता बरकरार रहेगी और सांप्रदायिक सद्भाव भी प्रज्ज्वलित रहेंगे ।

संदर्भ सूची :

1) आना इस देश – डॉ. कृष्णा अग्निहोत्री , पृ. 43
प्रथम संस्करण : 2014 , अमन प्रकाशन , रामबाग, कानपुर –208012 (उ. प्र.)
2) वही, पृ. 28
3) वही, पृ. 38